पाठ - 18

FSHM7M

# रानी चेन्नम्मा

कर्नाटक प्रान्त में एक छोटा सा कस्बा है कित्तूर। यह धारवाड़ और बेलगाँव के बीच बसा है।

एक बार की बात है, बेलगाँव के काकति नामक स्थान पर नरभक्षी बाघ का आतंक फैल गया। जन-जीवन संकट में था। उस समय कित्तूर में राजा मल्लसर्ज का शासन था। राजा उस समय काकति आए तो उन्हें बाघ के आतंक की सूचना मिली। राजा तुरन्त बाघ की खोज में निकले। सौभाग्य से बाघ का पता शीघ्र ही चल गया और राजा ने उस पर बाण चला दिया। बाघ घायल होकर गिर गया। राजा तुरन्त बाघ के निकट पहुँचे, लेकिन यह क्या ? बाघ पर एक नहीं दो-दो बाण बिंधे थे जबकि राजा ने एक ही बाण चलाया था। राजा आश्चर्य में पड़ गए। तभी उनकी दृष्टि सैनिक वेशभूषा में सजी एक सुंदर कन्या पर पड़ी। राजा को समझते देर न लगी कि दूसरा बाण कन्या का ही है।

राजा को देखते ही कन्या क्रुद्ध स्वर में बोली, ''आपको क्या अधिकार था जो आपने मेरे खेल में विघ्न डाला।'' राजा कुछ न बोल सके। वह मन ही मन कन्या की वीरता और सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसे देखते रह गए। इतने में राजा के अन्य साथी भी आ गए।

राजा ने उन्हें उस कन्या की वीरता के बारे में बताया। सभी लोग कन्या की वीरता की सराहना करने लगे।

राजा ने उस वीर कन्या के विषय में जानकारी की। उसे ज्ञात हुआ कि वह काकति के मुखिया की पुत्री चेन्नम्मा है। राजा ने मुखिया से उनकी वीरपुत्री का हाथ माँगा। मुखिया ने 'हाँ' कर दी और वह वीर कन्या कित्तूर की रानी चेन्नम्मा बन गई। राजा मल्लसर्ज ने 1782 से 1816 तक लगभग चैंतीस वर्ष कित्तूर के छोटे से राज्य पर शासन किया। वे रानी चेन्नम्मा की राजनैतिक कुशलता से अत्यंत प्रभावित थे। राज्य के शासन प्रबन्ध में वे रानी की सलाह लिया करते थे। पेशवा द्वारा धोखे से बन्दी बना लेने के कारण राजा मल्लसर्ज को बहुत समय तक बन्दीगृह में रहना पड़ा जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। कित्तूर लौटते-लौटते वह अन्तिम साँसें गिनने लगे। चेन्नम्मा ने राजा की रात-दिन सेवा की। स्वस्थ करने का हर सम्भव प्रयास किया किंतु क्रूरकाल से वह उन्हें बचा न पायीं। उन्होंने कित्तूर की स्वाधीनता की रक्षा को ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। यह ऐसा समय था जब अंग्रेज कित्तूर की वीरभूमि पर अपना अधिकार करने के लिए प्रयत्नशील थे।

राजा मल्लसर्ज के बाद कित्तूर की गद्दी पर उनका पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज बैठा। रुद्रसर्ज अस्वस्थ रहता था जिसके कारण शीघ्र ही उसकी भी मृत्यु हो गई। अब कित्तूर के सम्मुख उत्तराधिकारी का संकट आ खड़ा हुआ। अंग्रेज चाहते थे कि रानी किसी उत्तराधिकारी को गोद न लें। चेन्नम्मा अंग्रेजों की चाल समझ गईं।

**उन्होंने प्रण किया कि वे जीते जी कित्तूर को अंग्रेजों के हवाले नहीं करेंगी।**

चेन्नम्मा ने ब्रिटिश अधिकारियों को अपना मन्तव्य बार-बार स्पष्ट कर दिया किंतु वे अपनी चालें चलते रहे। क्रुद्ध होकर रानी ने कित्तूरवासियों को सचेत करते हुए अपने सरदारों और दरबार के अधिकारियों के सामने आवेशपूर्ण घोषणा की-''कित्तूर हमारा है। हम अपने इलाके के स्वयं मालिक हैं। अंग्रेज कित्तूर पर अधिकार कर उस पर शासन करना चाहते हैं। वे निश्चय ही भ्रम में हैं। कित्तूर के लोग स्वतंत्रता की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दे सकते हैं । हमारा एक सिपाही उनके दस-दस सिपाहियों के बराबर है। कित्तूर झुकेगा नहीं, वह अपनी धरती की रक्षा के लिए अन्तिम क्षण तक लड़ेगा।''

रानी की ओजपूर्ण वाणी का सटीक प्रभाव पड़ा। दरबारियों एवं जनता में जोश की लहर दौड़ गई। सब एक स्वर में चिल्ला उठे, ''कित्तूर की जय, रानी चेन्नम्मा की जय।''

अंग्रेजों को कित्तूर की स्वाधीनता खटक रही थी। अंग्रेज कलेक्टर थैकरे ने 23 सितम्बर, 1824 को कित्तूर पर घेरा डाल दिया। उसके सिपाही किले में घुसने की कोशिश करने लगे। चेन्नम्मा के सरदार गुरु सिछप्पा ने भी अपने वीर सिपाहियों को आदेश दिया कि उन्हें कुचल डालें, खदेड़ भगाएँ। पल भर में कित्तूर के वीरों ने अंग्रेजी सेना को तहस-नहस कर दिया। अंग्रेजी सेना के लगभग चालीस लोग बन्दी बना लिए गए। बन्दी बनाए गए लोगों में कुछ अंग्रेज सैनिक, कुछ स्त्रियाँ तथा बच्चे भी थे। चेन्नम्मा ने सैनिकों को तो बन्दीगृह में डाल दिया किंतु स्त्रियों तथा बच्चों को वह राजमहल के अतिथिगृह में ले आयीं। शत्रुपक्ष को सूचना दे दी गयी कि उनके बच्चे व स्त्रियाँ सुरक्षित हैं, जब चाहें उन्हें वापस ले जाएँ। रानी के इस उदारतापूर्ण व्यवहार से शत्रुपक्ष बहुत प्रभावित हुआ। थैकरे भी इस व्यवहार से प्रभावित हुए बिना न रह सका।

**वीरता और उदारता का ऐसा अद्भुत संगम बहुत कम देखने को मिलता है।**

अंग्रेजों के साथ हुए इस अल्पकालिक युद्ध में रानी को जो विजय मिली वह उनकी शक्ति का प्रथम संकेत थी। पराजय के बाद कलेक्टर थैकरे ने कई बार प्रयास किया कि वह रानी से मिलकर उन्हें अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने को विवश करें, किंतु उसके सभी प्रयास विफल रहे। हारकर कलेक्टर थैकरे ने कित्तूर के दुर्ग की ओर अपनी तोपें लगवा दीं। उसने कित्तूरवासियों को चेतावनी दी कि अगले दिन प्रातःकाल तक दुर्ग का द्वार न खोला गया तो दुर्ग को तोपों से उड़ा दिया जायेगा। रानी पर इस चेतावनी का कोई असर न हुआ। वह अपनी तैयारी में जुटी रहीं। अगले दिन प्रातः एक बार फिर चैबीस मिनट का समय दुर्ग का द्वार खोलने के लिए दिया। अंग्रेज सैनिकों को पूरी उम्मीद थी कि द्वार खुल जाएगा। ठीक चैबीस मिनट बाद एक झटके से दुर्ग का द्वार खुला। जो दृश्य था, वह अंग्रेजों की कल्पना से परे था। कित्तूर के सिपाही विद्युत गति से अंग्रेजी सेना पर टूट पड़े। रानी चेन्नम्मा किले के परकोटों पर खड़ी सेना का संचालन कर रही थीं। कमर में सोने की पेटी, पेटी में लटकती म्यान, दाहिने हाथ में चमचमाती नंगी तलवार और बायें हाथ में घोड़े की लगाम। रानी चेन्नम्मा का यह रूप उनके साहस और संकल्प का परिचय दे रहा था। कित्तूर के वीरों ने गुप्त द्वार से निकल-निकलकर शत्रुओं को मौत के घाट उतारना शुरू कर दिया। अंग्रेजी सेना इस आक्रमण के लिए तैयार न थी। अंग्रेजी सेना के पैर उखड़ गए और सैनिक भयभीत होकर भाग खड़े हुए। अपने सैनिकों को भागता देख थैकरे ने अपना घोड़ा दुर्ग की ओर बढ़ाया। कित्तूर का वीर सैनिक बालप्पा रानी के पास ही खड़ा था। उसने निशाना साधा और थैकरे को परलोक पहुँचा दिया। अंग्रेजी सेना में हाहाकार मच गया। थैकरे के अतिरिक्त अन्य कई बड़े अधिकारी और सैनिक मारे गए। यह एक निर्णायक युद्ध था जिसमें रानी चेन्नम्मा ने विजय प्राप्त की।

कित्तूर के निकट धारवाड़ नामक स्थान पर उस समय बहुत बड़ी संख्या में अंग्रेज सैनिक और अधिकारी विद्यमान थे। उन्हें इस समाचार पर विश्वास ही नहीं हुआ कि कित्तूर के मुट्ठी भर वीरों से अंग्रेजी सेना को मुँह की खानी पड़ी। उन्होंने तुरन्त अपने सभी सैनिक अड्डों पर यह समाचार भेज दिया। कई देशी राजाओं और मराठों को भी अंग्रेजों ने अपनी ओर मिलाने की कोशिश की। एक बार पुनः दलबल एकत्र कर अंग्रेजों ने कित्तूर रियासत पर आक्रमण की योजना बनाई।

अंग्रेजों ने रानी चेन्नम्मा को अधीनता स्वीकार करने के लिए अनेक प्रलोभन दिए, जिन्हें रानी ने ठुकरा दिया। वीर रानी किसी भी कीमत पर कित्तूर की स्वाधीनता बेचने को तैयार न थीं। इन प्रस्तावों पर वह अत्यंत क्रुद्ध हुईं। यद्यपि रानी के पास सैन्य बल कम था, फिर भी वह युद्ध के लिए तैयार थीं।

जब अंग्रेजों की दाल किसी भी प्रकार न गली तो अंततः उन्होंने दिसम्बर 1824 को पुनः कित्तूर पर आक्रमण कर दिया। वीर रानी अपने सैनिकों को उत्साहित करती रहीं। लगभग पाँच दिन तक युद्ध चला। कित्तूर दुर्ग के बाहर का मैदान वीरों की लाशों से पट गया। 5 दिसम्बर 1824 को प्रातः कित्तूर के ध्वस्त किले के परकोटे पर अंग्रेजों का झण्डा 'यूनियन जैक' फहराने लगा। एक स्वर्णिम अध्याय का अंत हो गया।

वीर रानी चेन्नम्मा बन्दी बना ली गईं। उन्हें लगभग पाँच वर्ष तक बेलहोंगल के किले में बन्दी बनाकर रखा गया। 21 फरवरी, 1829 को रानी की मृत्यु हो गई। उनकी वीरता, साहस, पराक्रम तथा देशभक्ति कित्तूरवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुई।

कित्तूर दुर्ग के खण्डहरों को देखकर आज भी उनकी गौरव गाथा सहसा ही याद हो आती है। बेलहोंगल में बना रानी चेन्नम्मा स्मारक तथा धारवाड़ में बना कित्तूर चेन्नम्मा पार्क रानी की वीरता, त्याग व उत्सर्ग की याद दिलाते हैं। देश-प्रेम और उत्सर्ग का यह ऐसा उदाहरण है जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

## अभ्यास

1. अंग्रेज क्यों नहीं चाहते थे कि रानी किसी उत्तराधिकारी को गोद लें ?

2. रानी चेन्नम्मा के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं ने आप को सबसे ज्यादा प्रभावित किया और क्यों ?

3. इस पाठ में रानी के व्यक्तित्व की किन-किन विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है ?

4. पता कीजिए-

क. कुछ और वीर महिलाओं के बारे में जानकारी कीजिए जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए।

ख. आपके क्षेत्र-गाँव, तहसील, जनपद में ऐसी महिलाएँ हो सकती हैं जिन्होंने अपने कार्यों से प्रदेश/देश का नाम रोशन किया होगा। उनके बारे में बड़ों से पता कीजिए।

5. वीर चेन्नम्मा की कथा का कक्षा में नाटक के रूप में अभिनय कीजिए।

6. वर्तनी शुद्ध कीजिए-व्यक्ती, आकृमण, आहूति, सौभाज्ञ।

7. पाठ में आये मुहावरे छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

8. सही विकल्प को चुनिए-

रानी चेन्नम्मा ने अंग्रेजों के सभी प्रलोभन ठुकरा दिए, क्योंकि-

- वह बहुत सम्पन्न थीं।
- वह कित्तूर की स्वाधीनता बेचने को तैयार न थीं।
- उन्हें अंग्रेजों पर विश्वास न था।

9. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

- रानी चेन्नम्मा ने प्रण किया कि वे .....।
- ..... में बना रानी चेन्नम्मा स्मारक तथा धारवाड़ में बना

..... रानी की वीरता त्याग व उत्सर्ग की याद दिलाते हैं।

**योग्यता विस्तार:**

भारत के मानचित्र में पता कीजिए-कर्नाटक, धारवाड़, बेलगाँव, कित्तूर।